प्रातः क्लास पिताश्री ओमशान्ति 24-10-67

ओमशान्ति। रूहानी बेहद का बाप रूहानी बेहद के बच्चों को समझा रहे हैं। यानि अपनी मत दे रहे हैं। यह तो जरूर समझते हो कि हम जीवात्मायें हैं। परन्तु निश्चय तो आत्मा का करना है ना। आगे जीव निश्चय था। अब आत्मा निश्चय करना है। यह हम कोई नया स्कूल नहीं पढ़ते यह हर 5000 वर्ष बाद पढ़ते आते हैं। बाबा पूछते हैं ना आगे कब पढ़ने आये हो। तो सभी कहते हैं हर 5000 वर्ष बाद आते हैं। हर 5000 वर्ष बाद पुरुषोत्तम संगम युगे बाबा के पास आते हो। यह तो याद होगा ना कि यह भी भूल जाते हैं। स्टुडेन्ट को स्कूल तो जरूर याद आवेगा ना। एम आबजेक्ट तो एक ही है। जो भी बच्चे बनते हैं, दो दिन का बच्चा हो वा पुराना हो परन्तु एम आबजेक्ट एक ही है। कोई को भी कस नहीं लगती। कसस कहा जाता है आमदनी को। कस घाटे को कहा जाता है यहाँ कोई को पढ़ाई में घाटा नहीं हो सकता। पढ़ाई में इनकम ही होती है। बाकि थोड़ा वा बहुत पुरुषार्थ पर मदार है। परन्तु है इनकम। हर एक पढ़ाई में इनकम है। ग्रन्थ बैठ कर पढ़ कर सुनाओ और कमाई। झट शरीर निर्वाह निकल आवेगा। साधु बना, एक दो शास्त्र बैठ सुनाया इनकम हो जावेगी। अभी यह भी सोर्स आफ इनकम है। हर एक बात में इनकम चाहिए ना। पैसे हैं तो कहाँ भी घूम फिर आओ। तुम बच्चे जानते हो बाबा हमको बहुत अच्छी पढ़ाई पढ़ाते हैं। जिस से 21 जन्मों की इनकम मिलती है। यह इनकम ऐसे है जो हम सदा सुखी बन जाते हैं। कब बिमार नहीं होंगे। सदा अमर रहेंगे। यह निश्चय करना होता है। ऐसे2 निश्चय रखने से तुमको हुल्लास आवेगा। नहीं तो कोई न कोई बात में धूटका आता रहेगा। अन्दर में सुमिरण करना चाहिए हम बेहद के बाप से पढ़ रहे हैं। भगवानुवाच यह जो गीता है, गीता का भी युग आता है ना। सिर्फ भूल गये हैं। यह है 5 युग वा $4\frac{1}{4}$ या $4\frac{1}{2}$ युग भी कह सकते हैं। यह संगम युग बहुत छोटा है। वास्तव में सवा भी नहीं कहेंगे। परसेन्टेज लगा दे सकते हैं। सो भी आगे [illegible] । कुछ तो [illegible] को भी बतलाने का नूंध है ना। तुम सभी आत्माओं में भी पार्ट का नूंध है। जो रिपीट हो रही है। तुम जो सिखते हो वह भी रिपिटेशन हुं ना। रिपिटेशन का राज का अभी तुम बच्चों को मालूम हुआ है। कदम पर पार्ट बदलता जाता है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे सेकण्ड से। टाईम बदलता जाता है। आज कल तो सेकण्ड भी बदलता रहता है। सेकण्ड भी बताते रहते हैं। इतने वर्ष, इतने मास इतने दिन, इतने घण्टे, इतने मिनट्स, इतने सेकण्डस। एक सेकण्ड न मिले दूसरे से। जूं मिसल टिक2 चलती रहती है। टिक हुई सेकण्ड पास हुआ। अभी तुम बेहद में खड़े हो। दूसरा कोई बेहद में खड़ा नहीं है। कोई को भी बेहद के अर्थात सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त की नालेज है नहीं। अभी तुमको फ्युचर का भी मालूम है। हम नई दुनिया में जा रहे हैं। यह है संगम युग। जिसको क्रास करना है। खाड़ी चैनल है ना?! यह है मीठी मीठी अमृत की चैनल। वह है दुःख की। अभी तुम विख के सागर से क्षीर के सागर में जाते हो। यह है बेहद की बात। दुनिया को कुछ भी इन बातों का पता नहीं है। नई बात है ना। यह भी तुम जानते हो भगवान किसको कहा जाता है। वह क्या पार्ट बजाते है। भगवान के बायोग्राफी को तुम ही जानते हो। टापिक में भी तुम बताते हो आओ तो परम पिता परमात्मा के बायोग्राफी तुमको समझावें। कैसे वाह, यूं तो बच्चे बाप की बायोग्राफी सुनाते हैं, कामन हैं। यह तो फिर बापों का बाप है ना। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही जानते हैं। अब तुमको यथार्थ रीति बाप परिचय देता है। तुमको भी बाप ने दिया है तब तुम समझाते हो। और तो कोई बेहद के बाप को जान न सके। तुम भी संगम पर ही जानते हो। मनुष्य मात्र देवता हो, वा शुद्र हो, पुण्यात्मा हो, पाप आत्मा हो कोई भी नहीं जानते। सिर्फ तुम ही ब्राहम्णा जो संगम युग पर हो तुम ही जान रहे हो। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। तब तो गायन भी है अति इन्द्रिय सुख पूछना हो तो इन गोप -गोपियों से पूछो। बाबा बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरू भी है। सुप्रिम अक्षर जरूर डालना है। कब2 बच्चे भूल जाते हैं। बाबा को कब लिखने में अक्षर रह जाता है तो बच्चे भी भूल जाते हैं।

24-10-67

2

फिर चित्र ही चैंज करना पड़े। यह सब बातें बच्चों कर बुधि में रहनी चाहिए। शिव बाबा की महिमा में यह भी अक्षर जरूर डालना है। सिवाए तुम्हारे और कोई तो जानते ही नहीं। तुम समझाये सकते हो गोया तुम्हारी विजय हुई ना। तुम जानते हो बेहद का बाप सर्व का बाप, सर्व का टीचर, सर्व का सदगति दाता है। बेहद का सुख बेहद का ज्ञान देने वाला है। फिर भी ऐसे बाप को भूल जाते हो। माया कितनी समर्थ है। ईश्वर को तो समर्थ कहते हैं, परन्तु माया भी कम नहीं। तुम कैसे अच्छी एक्यूरेट रीति जानते हो। इनका तो नाम ही रखा है रावण। राम राज्य और रावण राज्य। इस पर भी एक्युरेट समझाना है। राम राज्य है तो जरूर रावण राज्य भी है। सदैव राम राज्य तो हो न सके। रामराज्य श्री कृष्ण राज्य कौन स्थापन करते हैं, यह बेहद का बाप बैठ समझाते हैं। कृष्ण के साथ फिर अर्जुन, द्रौपदी 5 भाई आद आद क्या बैठ लिखा है। कितना खिलाड़ा है। है कुछ भी नहीं। झूठ माना झूठ। सर्व शास्त्र मई सिरोमणि गीता गाई जाती है। तुमको भारत खण्ड की बहुत महिमा करनी है। भारत सचखण्ड था ना। कितनी महिमा थी। बनाने वाला बाप ही है। तुम्हारा बाप के साथ कितना लव है। एमआबजेक्ट बुधि में है। यह भी जानते हो हम स्टुडेन्ट हैं। स्टुडेन्ट को अपनी पढ़ाई का नशा रहना चाहिए। कैरेक्टरस का भी ख्याल होना चाहिए। विवेक कहते है जब कि गाडली पढ़ाई है तो उस में एक दिन भी मिस न करना चाहिए। और टीचर के आने बाद लेट भी न पहुंचना चाहिए। टीचर के बाद आना यह भी एक इनसल्ट है। स्कूल में भी जो पिछाड़ी में आते हैं तो उनको टीचर बाहर में खड़ा कर देते हैं। बाबा अपना छोटेपन का मिसाल भी बताते हैं। हमारा टीचर तो बहुत सखत था। अन्दर आने भी नहीं देता था। यहां तो बहुत है जो देरी से आते हैं। समझना चाहिए बेहद का बाप पढ़ाते हैं और हम देरी से आते हैं, परन्तु इतना डर लगता नहीं है। क्योंकि कोई सजा नहीं है। आपे ही जो करे सो देवता, कहने से सो मनुष्य, कहने से भी जो न करे सो गधा। तुम तो अब देवता बन रहे हो। तो आपे ही पिछाड़ी में बाहर बैठ सुनना चाहिए। बताना चाहिए हम ने आपे ही अपन को सजा दी। यहां तो नम्बरवार भी बिठाये नहीं जाते। कितने ढेर बच्चे आते हैं। जो देवता होंगे वह आपे ही ख्याल करेंगे। सर्विस करने वाले भल बाबा के सामने बैठें। सपूत बच्चा जरूर बाप को प्यारा लगता है ना। एक दृष्टान्त भी देते हैं एक सयासी ने पूछा . . . सन्यासियों ने भी दृष्टान्त सब यहां से कापी किये हैं। भ्रमरी का मिसाल भी तुम्हारा है। ईश्वरी ज्ञान में इन्टरपेयर कर दिया है। अब हम किसको कहें। वह हठयोगी राज योग कैसे सिखलाये सकते। वह तो कहते हैं स्त्री नागिन है। अगर पवित्र रहना है तो जंगल में जाओ। बस। और कुछ नहीं। उनको तो ब्रह्म को ही याद करना है। नाम ही है ब्रह्म योगी ब्रह्मज्ञानी। तत्व योगी। तत्व अर्थात ब्रह्म का अर्थ एक ही है। जैसे यह आकाश तत्व है वैसे वह ब्रह्म तत्व है। अर्थात रहने का स्थान। अब रहने के स्थान को भगवान तो नहीं कह सकते। हिन्दुस्तानी अपन को हिन्दु कहते हैं। हिन्दु तो धर्म है नहीं। पत्थर बुधि हैं ना। युरोप का रहने वाला अगर अपना धर्म युरोप दिखावे तो बाकि क्राईस्ट क्रिश्चन आद कहां गये। यह तो अपने धर्म का ही भूले हुये हैं। बाप आकर समझाते हैं। पूछा जाता है हिन्दु धर्म किसने स्थापन किया। डबे में ठीकरी। अभी तुम समझते हो आदी सनातन देवी देवता धर्म तो यह (देवी देवता) था ना। इनका धर्म कब स्थापन हुआ, जरा भी किसकी बुधि में नहीं है। तुम्हारी बुधि से भी घड़ी2 खीसक जाता है। तुम अब देवी देवता बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। कौन पढ़ाये रहे हैं? खुद परम पिता परमात्मा। तुम समझते हो यह हमारा ब्राहमण कुल है। डिनायस्टी नहीं होती। यह है सर्वोत्तम ब्राहमण कुल। बाप भी सर्वोत्तम है ना। ऊंच ते ऊंच है। तो जरूर उनकी आमदनी भी ऊंची होगी। उनको ही श्री श्री कहते हैं। तुमको भी श्रेष्ठ बनाते हैं। तुम बच्चे ही जानते हो कि हमारे को श्रेष्ठ बनाने वाला कौन है। और कोई कुछ भी नहीं समझते। तुम कहेंगे हमारा बाप भी है, टीचर भी है, सदगुरु भी है। हम को पढ़ाये रहे हैं। हम आत्मा हैं हम आत्माओं को बाबा ने स्मृति दिलाई है कि तुम हमारे सन्तान हो। अदरहुड है ना। बाप को याद भी करते हैं समझते हैं वह हमारा निराकारी बाप है तो जरूर आत्मा

भी निराकार ही कहेंगे। बाबा ने समझाया है आत्मा एक ही शरीर छोड़ दूसरा लेती है। फिर पार्ट बजाती है। मनुष्य फिर आत्मा के बदले अपने को शरीर ही समझ लेते हैं। मैं आत्मा हूँ यह भी भूल जाते हैं। मैं तो कब भूलता नहीं हूँ। तुम आत्मायें सब हो शालिग्राम। मैं हूँ परम आत्मा माना परमात्मा। उनके ऊपर कोई दूसरा नाम है नहीं। उस परमात्मा का नाम है शिव। हो तुम भी ऐसे आत्मा परन्तु तुम सब शालिग्राम हो। शिव के मंदिर में जाते हैं वहां भी शालिग्राम बहुत होते हैं। शिवलिंग की पूजा कराते हैं तो शालिग्राम का साथ कराते हैं। तब ही बाबा ने समझाया है ताकि तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों की पूजा होती है। हमारी तो सिर्फ आत्मा की ही होती है। शरीर है नहीं। तुम कितना ऊंच बनते हो। बाप को तो खुशी होती है ना। बाप गरीब होता है। बच्चे पढ़ कर कितना चढ़ जाते हैं। क्या से क्या बन जाते हैं। बाप भी जानते हैं तुम कितना ऊंच थे। अब कितने आरफन बन गये हो। बाप को ही नहीं जानते। अभी तुम बाप के बने हो तो विश्व के मालिक बन जाते हो। बाप कहते हैं न, कहते भी हैं हेविनली गाड फादर। यह भी तुम जानते हो स्वर्ग की स्थापना हो रही है। वहां क्या-क्या होगा यह तुम्हारे सिवाय और कोई की बुधि में होगा ही नहीं। तुम्हारी ही बुधि में है हम विश्व के मालिक थे अब फिर बन रहे हैं। प्रजा भी ऐसे कहेंगी ना। हम मालिक हैं। यह बातें तुम बच्चों की ही बुधि में है। तो खुशी रहनी चाहिए ना। यह बातें सुन कर। फिर दूसरों को भी सुनानी हैं। इसलिए सेन्टर्स, प्रदर्शनी, म्युजियम आदि निकलती रहती हैं। जो कल्प पहले हुआ है वह ही होता रहेगा। म्युजियम सेन्टर के लिए तुमको बहुत आफर करेंगे। फिर बहुत निकल पड़ेंगे। सभी का हड्डियां नरम होती जाती हैं। तुम्हारी योग में कितनी ताकत जबरदस्त है। बाप कहते हैं तुम्हारे में ताकत बहुत है। भोजन तुम योग में रह कर खाओ। खिलाओ तो बुधि इस तरफ खैंचेगी। भक्ति मार्ग में तो गुरुओं के जूठा आदि भी बैठ खाते थे। तुम बच्चे समझते हो भक्ति मार्ग का विस्तार तो बहुत है। उसका वर्णन नहीं कर सकते। बीज और झाड़ है इसका वर्णन कर सकते हैं। बाकि कोई को बोलो झाड़ के पत्ते गिनती करो तो कर सकेंगे? नहीं। अथाह पत्ते होते हैं। बीच में तो पत्ते की निशानी भी दिखाई नहीं पड़ती। वन्डर है ना। इनको भी कुदरती कहेंगे। जीव जन्तु कितने वन्डरफुल हैं। अनेक प्रकार के जीव हैं। कैसे पैदा होते हैं बहुत वन्डरफुल चीज़ है। इसको कहा जाता है नेचर। यह भी बनाया खेल है। सतयुग में क्या-क्या देखेंगे वह नोन्ड चीज़ें ही होंगी। स्वर्ग थिंग न्यु होता है ना। मोर के लिए तो बाबा ने समझाया है उनको भारत का नेशनल बर्ड कहा जाता है। क्योंकि श्री कृष्ण के मुकुट में मोर का पंख दिखाते हैं। मोर और ढेल खूबसूरत भी होते हैं। गर्भ भी आंसु से होता है। इसलिए नेशनल बर्ड कहते हैं। ऐसे पक्षी तो बहुत सुन्दर-सुन्दर विलायत तरफ भी होते हैं। अभी तुम बच्चों को सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज समझाया है। जो और कोई नहीं जानते। बोलो हम आप को परम पिता परमात्मा की बायोग्राफी सुनाते हैं। रचता है तो जरूर उनकी रचना भी होगी। उनकी हिस्ट्री जागराफी हम जानते हैं। ऊंच ते ऊंच बेहद के बाप का क्या पार्ट है यह हम जानते हैं। दुनिया तो कुछ भी नहीं जानती। यह बहुत छी2 दुनिया है। इस समय खूबसूरत से भी मुसीबत है। बच्चियों को देखो कैसे2 भगाते रहते हैं। तुम बच्चों को इस विकारी दुनिया से नफरत होनी चाहिए। यह छी2 दुनिया छी2 शरीर है। हमको तो अब बाप को याद कर अपने आत्मा को प्योर बनाना है। हम सतोप्रधान थे तो सुखी थे। अब तमोप्रधान बने हैं तो दुखी हैं। फिर सतोप्रधान बनना है। तुम चाहते भी हो हम पतित से पावन बनें। गाते भी हैं पतित पावन... परन्तु नफरत कुछ नहीं आती। तुम बच्चे समझते हो यह छी2 दुनिया है। नई दुनिया में हमको शरीर भी गुल2 मिलेगा। अभी हम अलकापुरी के मालिक बन रहे हैं। बाकि कथायें आदि तो सब झूठी हैं। भक्ति मार्ग में कितनी किताबें गीता आदि पढ़ते हैं। मिलता कुछ भी नहीं। पढ़ाने वाले ने तो राजयोग सिखाये विश्व का मालिक बनाया। यह कथा सुनाने वाले क्या करते हैं। फिर जो पढ़ाने वाला आये तब हम विश्व के मालिक बनें। अच्छा जी ओम।